DEEKSHA – A Journal of Education
ISSN: 3049-3722 (Online)

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा हेतु प्रक्रिया सम्बन्धी मुद्दे

अपर्णा श्रीवास्तव[1]

शोध सारांश

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल कार्यक्रम बालक के सिर्फ मानसिक विकास से ही नहीं जुड़ा है बल्कि उसके शारीरिक, बौद्धिक, भाषा, सामाजिक, संवेगात्मक, आचरण, स्वास्थ्य इत्यादि से संबंधित है जिसमें बच्चे के सर्वांगीण विकास को शामिल किया जाता है। प्रारम्भिक देखभाल औपचारिक शिक्षा के लिए भी एक नींव है, जिसके आधार पर बच्चा आने वाले समय में अपने रूचि, क्षमता और सामथ्र्य का उचित दोहन करने में सक्षम बनता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल की प्रक्रिया में बच्चों से संबंधित परिवार, अभिभावक, पड़ोस, समाज, आस-पास का वातावरण, देखभाल करने के तरीके, पोषण और पोषक सभी मिलकर एक संघटक इकाई के रूप में कार्य करते है। इनके अतिरिक्त सरकार द्वारा संचालित केन्द्र और सामाजिक सहभागिता से संचालित केन्द्रों का भी योगदान है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रारम्भिक बाल्यावस्था से संबंधित क्रियाकलाप, जागरूकता और इससे संबंधित मुद्दों को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है।

बीजशब्द *- प्रारम्भिक बाल्यावस्था और देखभाल, जन्मपूर्व शिक्षा, जन्मोत्तर शिक्षा व प्रक्रिया सम्बन्धी मुद्दे।*

प्रस्तावना

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का शाब्दिक अभिप्राय प्राथमिक शिक्षा से पूर्व अर्थात् पहले की शिक्षा से है। दूसरे शब्दो में बालक प्राथमिक स्कूल की कक्षा में प्रवेश से पूर्व जो भी शिक्षा प्राप्त करता है उसे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कहते हैं। वास्तव में प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा माता के गर्भधारण के साथ प्रारम्भ हो जाती है तथा बालक की आयु 5 या 6 वर्ष होने तक चलती है। इसे दो भागों, जन्मपूर्व देखभाल और शिक्षा तथा जन्मोत्तर देखभाल और शिक्षा में बांटा जा सकता है। जन्मपूर्व देखभाल और शिक्षा के अन्तर्गत माता के गर्भ में स्थित बालक की देखभाल आती है। इसमें माता के शारीरिक स्वास्थ्य, भोजन, मनोस्थिति आदि पर ध्यान दिया जाता है जिससे गर्भ में स्थित बालक का शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास ठीक ढंग से हो सके। जन्मोत्तर पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत घर, परिवार व पड़ोस तथा पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में अर्जित ज्ञान आता है (गुप्त, 2015 पृष्ठ 286)। प्रारंभिक बाल्यावस्था ऐसी महत्वपूर्ण अवधि है जो बाद के अधिगम और विकास के लिये आधार तैयार करती है। इस अवधि में प्रदान

[1] सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

DEEKSHA – A Journal of Education
ISSN: 3049-3722 (Online)

किये गये अनुभव और अवसर बच्चे के विकास विशेष रूप से मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षो में बच्चे को समुचित विकास के लिए एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है, जिसमें उसे सुरक्षा और स्वीकृति मिले। वह एक ऐसे प्रेरणात्मक वातावरण की आवश्यकता महसूस करता है, जहां वह मुक्त रूप से खोजबीन कर सके, अपने आस-पास की वस्तुओं को छूकर उनका अनुभव कर सके, छानबीन के आधार पर अपने सभी खिलौनों तथा घर में इस्तेमाल होने वाले सामान को भली प्रकार जान सके। तीव्रगति से वृद्धि और विकास की ओर उन्मुख इस बच्चे की जिज्ञासा को जागृत करने व उसे संतुष्ट करने के लिए विविध प्रकार की गतिविधियों का प्रावधान होना चाहिए, जिनमें से वह अपनी पसंद के खेल अथवा खिलौने चुन सके और निर्भीक होकर उनके खेल सके (गुप्ता, 2013 पृष्ठ 3)। देखभाल से हमारा आशय सभी बच्चो को प्रेम और स्नेह प्रदान करना तथा स्वस्थ, स्वच्छ, सुरक्षात्मक और सक्रिय वातावरण उपलब्ध कराना है। षिक्षा खोज, प्रयोग, अवलोकन, सहभागिता और अन्तः क्रिया द्वारा ज्ञान, कुषलता, अभितृत्ति और मूल्यों को गृहण करने की प्रक्रिया है। ये समस्त अनुभव बच्चों को अपने बारे में और दुनिया के बारे में जानने में मदद करते है।

अतः ईसीसीई का अर्थ बच्चों को विकास के प्रारम्भिक वर्षो के दौरान स्वास्थ्य, पोषण, देखभाल और सीखने के अवसर उपलब्ध कराना है। खेल - आधारित एवं विकासात्मक जरूरतों के अनुसार गतिविधियों वाला एक सुरक्षात्मक और उद्दीपित वातावरण बच्चों के शारीरिक-गत्यातक, संज्ञानात्मक, सामाजिक-सांवेगिक और भाषा के विकास के लिए महत्वपूर्ण है (रा०मु०वि०सं० प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा, पृष्ठ 1)। इसलिए गुणवत्तापूर्ण और समतामूलक प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित किया जाना परिहार्य है। इस दृष्टि के साथ भारत प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सेवाओं और कार्यक्रमों में समतामूलक पहुँच और आरम्भिक निवेश महत्वपूर्ण हो गये हैं। भारत सरकार द्वारा की गयी पहल में इस वैश्विक ईसीसीई प्रतिबद्धता का पालन और प्रभाव स्पष्टता से प्रतिबिम्बित होता है।

एक गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-भाल और शिक्षा कार्यक्रम के प्रमुख घटकों में शामिल है - एक क्रिया आधारित, बालकेंद्रित तथा आयु विशिष्ट प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की पाठ्यचर्चा, अध्यापक जो बच्चों से प्यार करें तथा जो स्वयं प्रेरित और अभ्यासपरक हों, ढांचागत सुवधिाएं जो उद्देष्य प्राप्ति में सहायक और कार्यानुसार उचित हो, लगातार और सुधार उन्मुख निरीक्षण तथा निगरानी और इनसे भी अधिक आवश्यक है। एक सुरक्षित, निरापद तथा देख-भालपूर्ण वातावरण जिसमें आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार की क्रियाओं के लिए पर्याप्त स्थान हो। एक अच्छे बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम में बच्चों को समुचित प्रेरणा और उनके विकास तथा परिपक्वता स्तर के अनुरूप्

DEEKSHA – A Journal of Education
ISSN: 3049-3722 (Online)

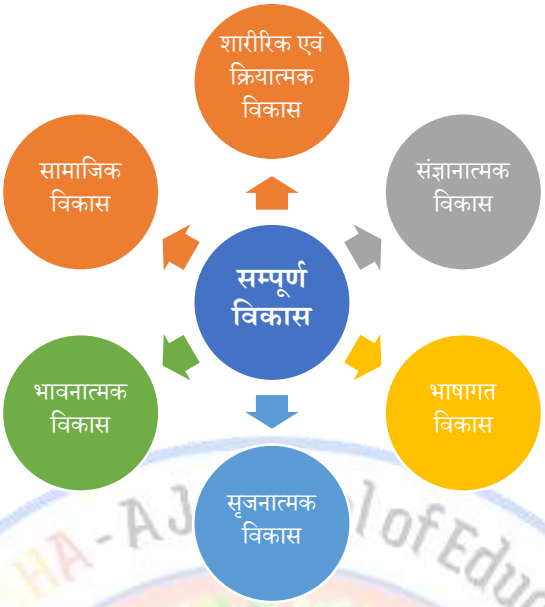

चित्र 1. विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास के पहलू

सीखने संबंधी क्रियाएं प्रदान की जाती है। हाल ही में एनसीईआरटी एवं नीपा (N.I.E.PA) द्वारा कराया गया अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण सभी बच्चों के लिए ईसीसीई सेवाओं में सतत् वृद्धि का संकेत करता है। हालांकि सर्वेक्षणों से पता चलता है कि तीन से छः आयु वर्ग के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई उसमें भी विशेष रूप से शैक्षणिक घटक अच्छी अवस्था में नहीं है। इसके पीछे के कारणों में आयु और विकास के अनुरूप उपयुक्त पाठ्यक्रम, सुविधाएं, आधारभूत ढ़ांचे, शिक्षण-अधिगम सामग्री, संसाधनों, आवश्यक निधियों, योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों, मानक मूल्यांकन प्रणाली का अभाव है (रा०मु०वि०सं० प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा, पृष्ठ 70)। इसके अतिरिक्त औपचारिक शिक्षा का प्रभाव, रटकर याद करना, कक्षा-कक्ष की व्यवस्था तथा उसके प्रदर्शन पर पर्याप्त ध्यान न देना, बच्चों की आयु, उनके विकास की आवश्यकताएँ तथा उनकी योग्यताओं की जानकारी न होना, सामुदायिक स्वामित्व की कमी, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतों का अभाव आदि अन्य नाजुक मुद्दे हैं। व्यक्तिगत, संस्थानिक तथा सरकारी स्तरों पर इन पर ध्यान देने तथा सुधार किये जाने की आवश्यकता है।

यहाँ कुछ प्रारंभिक देखभाल और षिक्षा से संबंधित मुद्दे ऐसे हैं जिन पर समुचित ढंग से ध्यान नहीं दिया गया है, सम्भवतः इसलिए कि हमने व्यक्तिगत या सरकारी दोनों ही स्तरों पर ईसीसीई के गुणवत्ता के मानकों के साथ समझौता कर लिया। ईसीसीई कार्यक्रमों के नियोजन, (रा०मु०वि०सं० प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा, पृष्ठ 71) कार्यान्वयन तथा देखरेख सबंधी निम्नलिखित मुद्दों का विस्तार से अध्ययन करते हैं –

DEEKSHA – A Journal of Education
ISSN: 3049-3722 (Online)

प्रवेश प्रक्रिया - ईसीसीई केन्द्रों की प्रवेश की तिथि, प्रवेश की आयु तथा उचित प्रवेश प्रक्रिया में बहुत अधिक स्पष्टता या पारदर्शिता नहीं है। बच्चों का नामांकन विशेष रूप से महानगरों तथा अन्य बड़े शहरों में औपचारिक परीक्षण द्वारा किया जाता है। सम्भवतः पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश के लिए आवेदकों की एक बड़ी संख्या के कारण ऐसा हो रहा है। इस तरह का चलन बच्चों की अस्वीकृति को बढ़ावा देती हैं जो कि इस अल्पव्यस्कता में उनके आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान को नष्ट कर सकती है।

आधारभूत ढांचा, सामग्री तथा कक्षाकक्ष का वातावरण - ईसीसीई केन्द्रों में आयु और विकास के अनुरूप उपकरणों और खेल-सामग्री का अभाव है। अधिकांशः ईसीसीई केन्द्रों में नामांकित बच्चों की संख्या के लिए ये सामाग्री अपर्याप्त है। इसीसीई केन्द्रों पर प्रदान की जाने वाली खेल-सामग्री मानदण्डों को पूरा नहीं करती और न ही उनका सही रख-रखाव है। कुछ स्थितियों में यह सामग्री सुरक्षित नहीं है और न ही शिक्षक द्वारा उचित ढंग से उपयोग में लायी जाती है। इसके अलावा कक्षा का वातावरण बच्चों को अधिगम के लिए, सामग्री के परिचालन, तथा खोज के अवसर प्रदान नहीं करता।

पाठ्यक्रम - छोटे बच्चों की विशेषताओं, जरूरतों और विकास को ध्यान में रखते हुए उनके लिए व्यवस्थित सभी प्रकार के नियोजित अनुभव पाठ्यक्रम में समाहित होते हैं। वर्तमान में ईसीसीई के लिए कोई निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं है। हालांकि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (एम.डब्ल्यू.सी.डी.) ने ईसीसीई के लिए एक पाठ्यक्रम की रूपरेखा विकसित की है, जिसमें बच्चों को शिक्षण अधिगम के केन्द्र में रखा गया है। छोटे

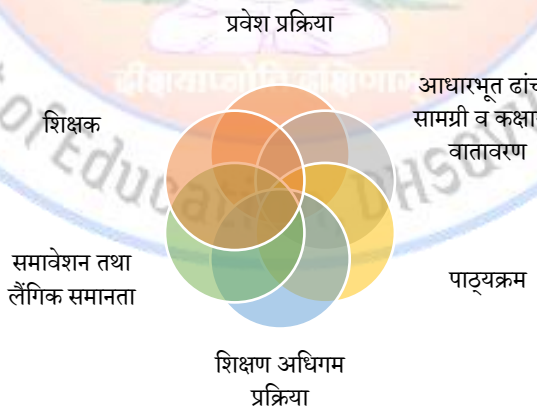

चित्र 2. ईसीसीई प्रक्रिया संबंधी मुद्दे

बच्चों के अधिगम अनुभवों की व्यवस्था के लिए खेल विधि आधारित उपागम का सुझाव दिया गया है। इन दिशा- निर्देशों की उपलब्धता के बाद भी अधिकांश ईसीसीई केन्द्र अपने शिक्षण में इस पाठ्यक्रम के प्रारूप

के अनुरूप बनने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया - ईसीसीई केन्द्रों में शिक्षण गतिविधि आधारित होनी चाहिए। हालांकि अधिकांश विधिया बच्चों को प्रश्न पूछने के, प्रयोग के, अन्वेषण के तथा सहभागिता के बहुत कम अवसर प्रदान करती है। जो उनकी कल्पना और सृजनात्मक चिन्तन के कौशलों के विकास को रोकता है। अधिगम प्रक्रिया ईसीसीई में मुख्य रूप से लचीली, बहआयामी, बहु-स्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि - आधारित और खोज-आधारित षिक्षा को शामिल किया गया है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 9)। जैसे अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती , रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियों और तार्किक सोच समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृष्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

समावेशन तथा लैंगिक समानता - समावेशन तथा लैंगिक समानता ऐसे मुद्दे हैं जिन पर जीवन के आरंभिक चरण में एक समावेशित पूर्व प्राथमिक विद्यालय के वातावरण में सभी बच्चों के लिए समतामूलक और सम्मानजनक वातावरण समाहित होता है। इस प्रकार का वातावरण बच्चों में स्व-अस्तित्व के प्रति सकारात्मकता तथा अपनेपन की भावना के विकास के लिए अपरिहार्य है। इस अवधि के दौरान लिंग तथा समावेशन सम्बन्धी मुद्दों से निपटने के लिए प्रायः शिक्षक न तो सचेत होते हैं और न ही प्रशिक्षित होते हैं। सभी बच्चों के लिए सुलभ तथा सम्मानजनक वातावरण के निर्माण के लिए सरकारी तथा ईसीसीई केन्द्रों के स्तर पर ठोस प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

शिक्षक - ईसीसीई कार्यक्रम के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए योग्य एवं सुप्रशिक्षित शिक्षक महत्वपूर्ण हैं। शिक्षकों संबंधी मुद्दे उनकी योग्यता, नियुक्ति, वेतन तथा प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण से सम्बन्धित हैं। नियुक्त शिक्षकों की योग्यताओं में बहुत अन्तर है। वे या तो नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग (एनटीटी) होते है या फिर शिक्षा स्नातक (बी.एड.) पूर्व सेवा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जैसे कि एनटीटी डिप्लोमा या प्रमाण पत्र आधारित पाठ्यक्रम हर जगह निरन्तर बढ़ रही अनियमित संस्थाओं द्वारा चालये जा रहे हैं। इसी प्रकार बिना किसी उपयुक्त प्राधिकारी की मान्यता के कुछ विनियमित संस्थाएँ विभिन्न अवधि के विविध प्रकार के ईसीसीई या एनटीटी पाठ्यक्रम संचालित कर रही है। ईसीसीई शिक्षकों के वेतनमानों में भी भिन्नताएँ हैं और अधिकांश को बहुत कम वेतन मिलता है। अधिकांश ईसीसीई केन्द्रों में बच्चों की संख्या बहुत अधिक है और कक्षा में केवल एक ही शिक्षक है।

प्रशासनिक/प्रबन्धकीय मुद्दे - एक ईसीसीई केन्द्र के विकास और स्थिरता के लिए प्रशासन और प्रबंधन के मुद्दे

DEEKSHA – A Journal of Education
ISSN: 3049-3722 (Online)

महत्वपूर्ण है। इन मुद्दों में निम्नलिखित बिन्दु समाहित हैं -

नियामक ढ़ाँचा - मौजूदा ईसीसीई केन्द्रों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने तथा अनियमित ईसीसीई केन्द्रों की बाढ़ को रोकने के लिए एक मजबूत नियामक ढांचा अनिवार्य है। हालंकि राष्ट्रीय स्तर पर और राज्य दोनों पर ही कोई सुपरिभाषित नियामक ढांचा उपलब्ध नहीं है। कुछ राज्यों ने अपना राज्य स्तरी नियामक ढांचा विकसित किया है। जो अन्य राज्यों के सन्दर्भ में लागू नहीं किया जा सकता। हालांकि यह जानना उत्साहजनक है कि एम.डब्ल्यू.सी.डी. ने एक राष्ट्रीय ईसीसीई परिषद् का गठन किया है, जो उचित दिशा में उठाया गया कदम है।

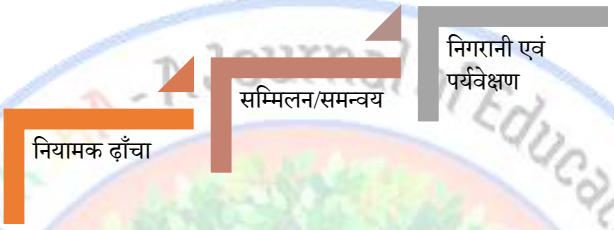

चित्र 3. ईसीसीई प्रशासनिक प्रबंधन संबंधी मुद्दे

निगरानी एवं पर्यवेक्षण - निगरानी एवं पर्यवेक्षण तन्त्र, ईसीसीई केन्द्र के प्रशासन और प्रबन्धन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। हालांकि यह ईसीसीई कार्यक्रमों के सबसे कमजोर पहलुओं में से एक है। ईसीसीई केन्द्रों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए बड़े और छोटे दोनों ही स्तरों पर कोई स्पष्ट निगरानी एवं पर्यवेक्षण तन्त्र नहीं है। भागीदार जैसे कि शिक्षक, अभिभावक, नीति-निर्माता, शैक्षिक नियोजक और प्रशासक आदि भी इस व्यवस्था और इसमें विभिन्न स्तरों पर अपनी भूमिका के प्रति जागरूक नहीं हैं। इसलिए ईसीसीई केन्द्रों की गुणवत्ता को बढाने में सक्षम नहीं है।

सम्मिलन/समन्वय - सरकारों के बीच एक मजबूत और सुसंगत सम्मिलन/ समन्वय की कमी है, जिससे कि उनकी भूमिकाओं और उत्तरदायित्व के प्रति अनिश्चितता बढ़ती है। बच्चों के विभिन्न कार्यक्रमों तथा सेवाओं हेतु संस्थानों, सम्बन्धित मंत्रालयों तथा सरकारों के बीच का एक मजबूत और सुसंगत सम्मिलन/ समन्वय का निर्माण अत्यधिक आवश्यक है। जिससे शिक्षा, देखभाल, स्वास्थ्य और सुरक्षा से जुड़ी बच्चों की आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जा सके।

निष्कर्ष - बालकों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास छह वर्ष की अवस्था से पूर्व हो जाता है इसलिए शारीरिक वृद्धि तथा मस्तिष्क के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए आरम्भिक छह वर्षों को महत्वपूर्ण माना जाता हैं गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. के सार्वभौमिक प्रावधान को शीघ्रतिशीघ्र, निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व उपलब्ध किया जाना चाहिए जिससे सुनिश्चित हो सके कि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बालक स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह

DEEKSHA – A Journal of Education
ISSN: 3049-3722 (Online)

से तैयार है। निम्न मुद्दों के निवारण हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में अनेक प्रावधान, सुझाव तथा सुधारों को दर्शाया गया है। ईसीसीई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक - भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज - संवेगात्मक नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है। आंगनबाडियों को स्कूल परिसरों/ समूहों में पूरी तरह से एकीकृत किया जायेगा। सीखने को मुख्य रूप से खेल-आधारित होना चाहिए, जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं और प्रारंभिक साक्षरता और संख्या-ज्ञान विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। षिक्षकों के शुरूआती कैडर को तैयार करने के लिए आंगनबाडी कार्यकत्रियों/ शिक्षको को एनसीईआरटी द्वारा विकसित पाठ्यक्रम / षिक्षण-षास्त्रीय फ्रेमवर्क के अनुसार एक व्यवस्थित तरीके से प्रषिक्षण दिया जाएगा। सरकार के द्वारा योजनाओं पर निगरानी करना और उनका पर्यवेक्षण करना, लोगों को जागरूक करना और उनकी जबावदेही सुनिश्चित करना साथ ही योजना की सफलता हेतु जन समुदायों का सहयोग लेना तभी इस लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव होगी।

सन्दर्भ सूची -

गुप्त, एस.पी. व अल्का गुप्ता (2015). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

गुप्त, एस.पी. व अल्का गुप्ता (2015). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज,

गुप्ता, मंजीत सेन (2013). प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

चौधरी, कृष्ण चन्द्र (2020). प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल विकास और शिक्षा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना

झा, रेनू व अरूणा शर्मा (2019). पूर्व बाल्यावस्था- परिचर्चा और शिक्षा, ठाकुर पब्लिकेशन, भोपाल

त्यागी, गुरूसरनदास (2005). भारतीय शिक्षा का विकास, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

सक्सेना, सविता (2021). प्रारम्भिक बाल्यावस्था, देखभाल एवं शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

*****